कविता की बात सुनाती कविताएँ

वेणुगोपाल की ऐसा क्यों होता है, श्रृंखला की कविताओं पर केन्द्रित

प्रियंका

शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय

वेणुगोपाल की कविताओं में विचार का पक्ष अधिक मुखर रहा है। मेरी समझ से इसका कारण उनकी स्पष्ट पक्षधरता है। नक्सल जैसी उग्रवामपंथी विचारधारा से सक्रिय तौर पर सम्बद्ध कवि की वैचारिक प्रखरता स्वाभाविक है। कविता को शोषण के विरूद्ध और साम्यवाद के पक्ष में इस्तेमाल करने की जो तकनीक प्रगतिशील कविता के दौर में विकसित हुई थी, नक्सल क्रांति के दौर में उसे पर्याप्त व्यावहारिक आधार मिला। हिन्दी साहित्य में वेणुगोपाल की पहली मुकम्मल पहचान इसी दौर के दायित्वबोध से आबद्ध, अभिव्यक्ति के भारी खतरे उठा सकने वाले कवि के बतौर हुई थी। नंद चतुर्वेदी ने त्रैमासिक पत्रिका बिंदू के जनवरी-मार्च 1971 के अंक में लिखा है कि- वेणुगोपाल एक बेहद मामूली आदमी हैं। कागज नगर में स्कूल अध्यापक लेकिन अब उस वेणुगोपाल में एक और वेणुगोपाल का जन्म हुआ है, जो अपनी कविताओं के कारण जेल से लौटा है।.. जिसे कविता के सही मर्म को समझने वाले पुलिस के थानेदारों ने समय रहते ही पकड़ लिया और एक भयंकर दुर्घटना होते-होते बच गई।

वेणुगोपाल के चार कविता संकलन, वे हाथ होते हैं (1972), हवाएँ चुप नहीं रहतीं, (1980), चट्टानों का जलगीत (1980) और ज्यादा सपने (मरणोपरांत 2014) प्रकाशित हुए हैं। इनके अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अथवा अप्रकाशित उनकी कई कविताएँ असंकलित हैं। वेणुगोपाल ने अधिकतर छोटे या सामान्य आकार की कविताएँ लिखी हैं। कुछ लम्बी कविताओं के अतिरिक्त उन्होंने कई श्रृंखलाबद्ध कवितायें भी लिखी हैं। इन श्रृंखलाबद्ध कविताओं में प्रॉक्सी, ब्लैकमेलर, जब हम तुम मिले, पत्थर में गोताखोरी, अस्पताल, खुद अपनी ही प्रतीक्षा आदि उल्लेखनीय हैं। यह आलेख उनकी कविताओं की ऐसी ही एक श्रृंखला ऐसा क्यों होता है, पर केन्द्रित है। इस श्रृंखला में कुल नौ छोटी.छोटी कविताएँ लिखी गयी हैं। ये कविताएँ भोपाल से प्रकाशित होने वाली पत्रिका साक्षात्कार के मार्च 2004 अंक में प्रकाशित हुई थीं।

ये कविताएँ मूलतः कवि और कविता के बीच के अत्यंत संवेदनशील सम्बन्ध और कविता कर्म के सरोकारयुक्त होने की आवश्यकता पर केन्द्रित हैं । ये कविताएँ कवियों की रचनात्मक निष्ठा, रचनात्मक संघर्ष, उनके विचलन और दोहरेपन के पहलुओं पर रौशनी डालती हैं। रचनाकर्म के प्रति वेणुगोपाल के नजरिये और व्यवहार को समझने के लिए ये कविताएँ बेहद महत्वपूर्ण हैं। अपनी पक्षधरता और इस कारण से आत्मघाती परिणाम झेलने के लिए जिस कवि को जाना जाता है, उनके नजरिये और व्यवहार को समझना स्वाभाविक रूप से अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

ये कविताएँ मूलतः कवि और कविता के बीच के अत्यंत संवेदनशील सम्बन्ध और कविता कर्म के सरोकारयुक्त होने की आवश्यकता पर केन्द्रित हैं । ये कविताएँ कवियों की रचनात्मक निष्ठा, रचनात्मक संघर्ष, उनके विचलन और दोहरेपन के पहलुओं पर रौशनी डालती हैं। रचनाकर्म के प्रति वेणुगोपाल के नजरिये और व्यवहार को समझने के लिए ये कविताएँ बेहद महत्वपूर्ण हैं। अपनी पक्षधरता और इस कारण से आत्मघाती परिणाम झेलने के लिए जिस कवि को जाना जाता है, उनके नजरिये और व्यवहार को समझना स्वाभाविक रूप से अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। इस श्रृंखला की लगभग सभी कविताएँ आकार में बेहद छोटी हैं, लेकिन मर्म में बेहद गहरी। कुछ पंक्तियों की पहली कविता इस तरह है -ऐसा क्यों होता है, कि कवियों को हमेशा, मुखौटों की दरकार रहती है, जबकि उनका अपना चेहरा, किसी मुखौटे से कम नहीं होता! यह कविता कवियों के दोहरेपन और इसके लगातार बढ़ते जाने पर बात करती है । सामान्यतः कवि अपनी ही कविता में व्यक्त विचार से विरोधी व्यवहार करने वाले होते हैं । यानी उनका अपना ही चेहरा एक मुखौटा होता है। इसके बाद भी अपनी कविताओं में वैचारिक छद्म का विस्तार करते हुए वे अपने लिए कविताओं के नये-नये आवरण तैयार करने की कोशिश करते हैं ।

इस श्रृंखला की चौथी कविता छद्म के विडम्बनापूर्ण विस्तार की ही बात करती है- ऐसा क्यों होता है, कि कवि तो, परदे के खिलाफ, होता है, लेकिन, उसकी कविता, बिना घूँघट के, बाहर क़दम तक नहीं रखती। मेरी समझ से कविता का यह घूँघट स्वयं कवि का भी घूँघट होता है या यह कह लें कि यह वही मुखौटा है, जिसकी उसे दरकार